प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग की ओर से एक–दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ आयोजन

पन्तनगर। 24 मार्च 2025। विश्वविद्यालय में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित परियोजना ए.आई.सी.आर.पी. आनई.ए.ए.आई के अंतर्गत एक–दिवसीय किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम विश्वविद्यालय के फार्म मशीनरी एवं पावर इंजीनियरिंग विभाग किया गया। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में डा. आर.एन. पटैरिया, प्राध्यापक एवं पी. आई. ने ग्राम–ख्युसालकोट, ब्लॉक–ताड़ी खेत, जिला–अल्मोड़ा के अनुसूचित जाति के लगभग 20 किसानों को शिक्षित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में चीड़ की पत्तियों से बायोचार बनाकर इसकी ब्रिकेट बनाने का प्रशिक्षण दिया गया, जिससे भविष्य में किसानों के लिए चीड की पत्तियों में आलन की समस्या से निदान तथा इन चीड की पत्तियां कैसे उर्जा का उत्पादन किया जा सके तथा साथ ही साथ किसानों की आय में वृद्धि भी हो। यह ब्रिकेटन केवल चीड़ की पत्तियों के जंगल में आग को कम करने में सहायक है बल्कि इसके साथ–साथ पर्यावरण हितैषी भी है। चीड़ की पत्तियों और अन्य उपलब्ध बायोमास से चार बनाकर इस चार से ब्रिकेट बनाकर वैकल्पिक उर्जा का विकल्प तैयार किया जा सकता है। खास बात यह है कि इसमें कही भी बिजली के उपयोग की कोई भी जरूरत नहीं होती है। ऐसे बनेगी ब्रिकेट– कृषि यंत्र व प्रक्षेत्र अभियांत्रिकी विभाग के प्राध्यापक डा. राज नारायण पटैरिया ने बताया कि बायोचार यंत्र में चीड़ की पत्तियों या खपतवार 60 से 70 फीसदी ही जलाया जाता है, फिर दूसरी खेपडाल दी जाती है और प्राक्रितक की जा जाती है जब तक पूरा यंत्र नभरजाए। इसके बाद ढक्कन को पैक कर दिया जाता है, इसके बाद को पाउडर यानी बायोचार निकलता है। इसमें पानी, चिकनी मिट्टी और गोबर मिलाकर इसका पेस्ट बनाया जाता है। फिर इस पेस्ट को ब्रिकेटिंग मशीन में डालकर ब्रिकेट करते है। यह होगा फायदा यह ईंधन की लकड़ी के लिए पर्वतीय क्षेत्रों के किसानों की मेहनत को कम करेगी। साथ ही जंगलों में आग के खतरों को भी कमकरे। इस से दूरस्थ पर्वतीय क्षेत्रों के ग्रामीणों की ईंधन के लिए लकड़ी पर निर्भरता भी कम होगी और पर्यावरण संरक्षण में मदद मिलेगी। ग्राम–ख्युसालकोट, ब्लॉक–ताड़ीखेत, जिला–अल्मोड़ा के उक्त किसानों को प्रशिक्षण के बाद बायोचार यंत्र तथा ब्रिकेटिंग मशीन निःशुल्क परियोजना के अंतर्गत प्रदान की गई।

कार्यक्रम में किसानों के साथ अधिकारी।